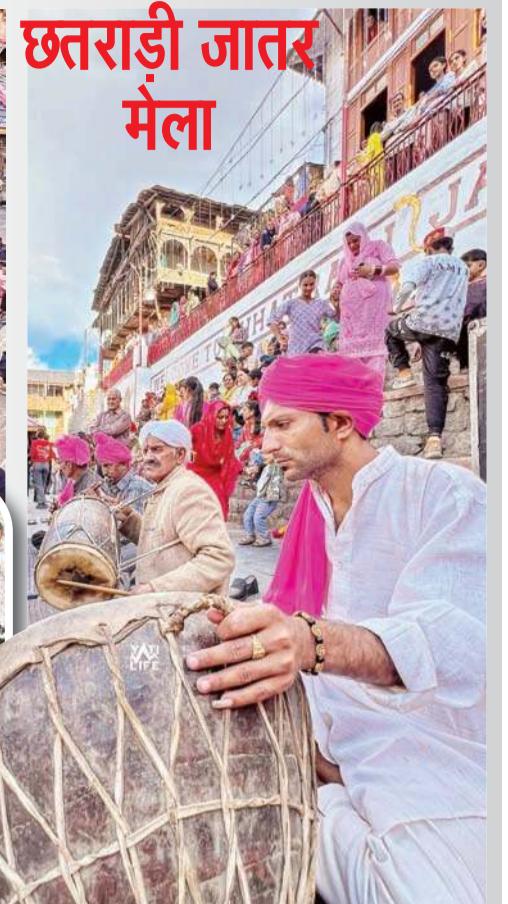
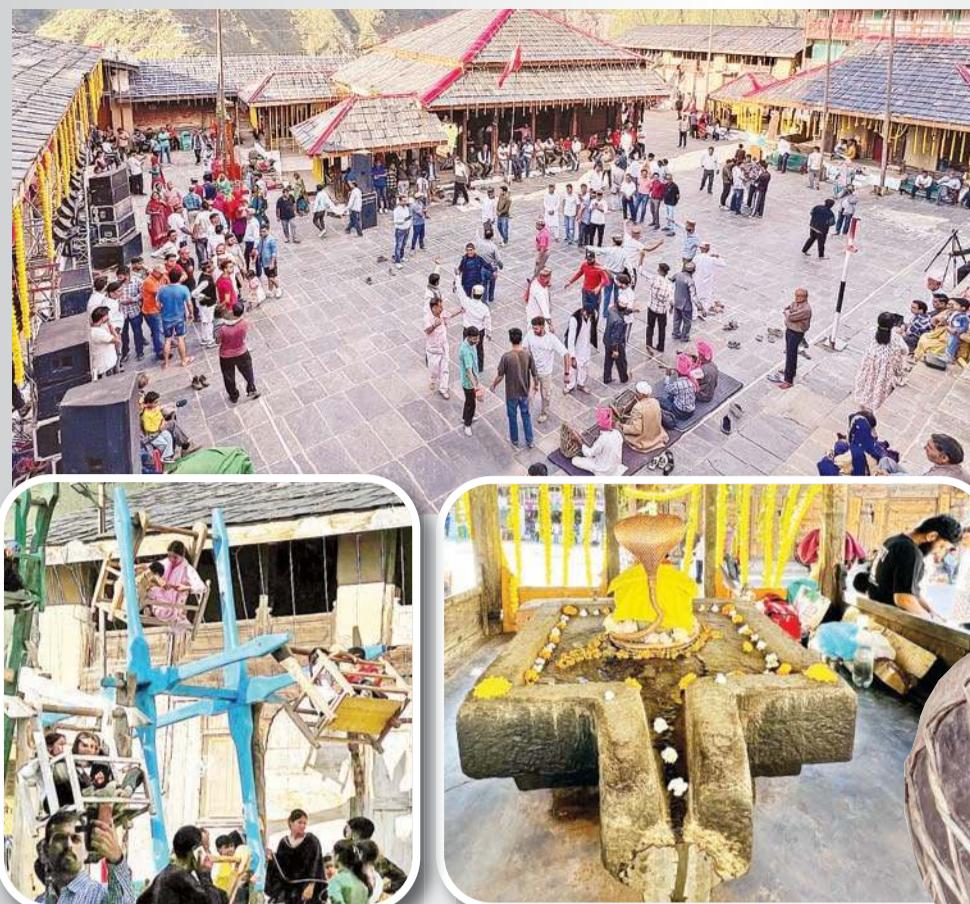
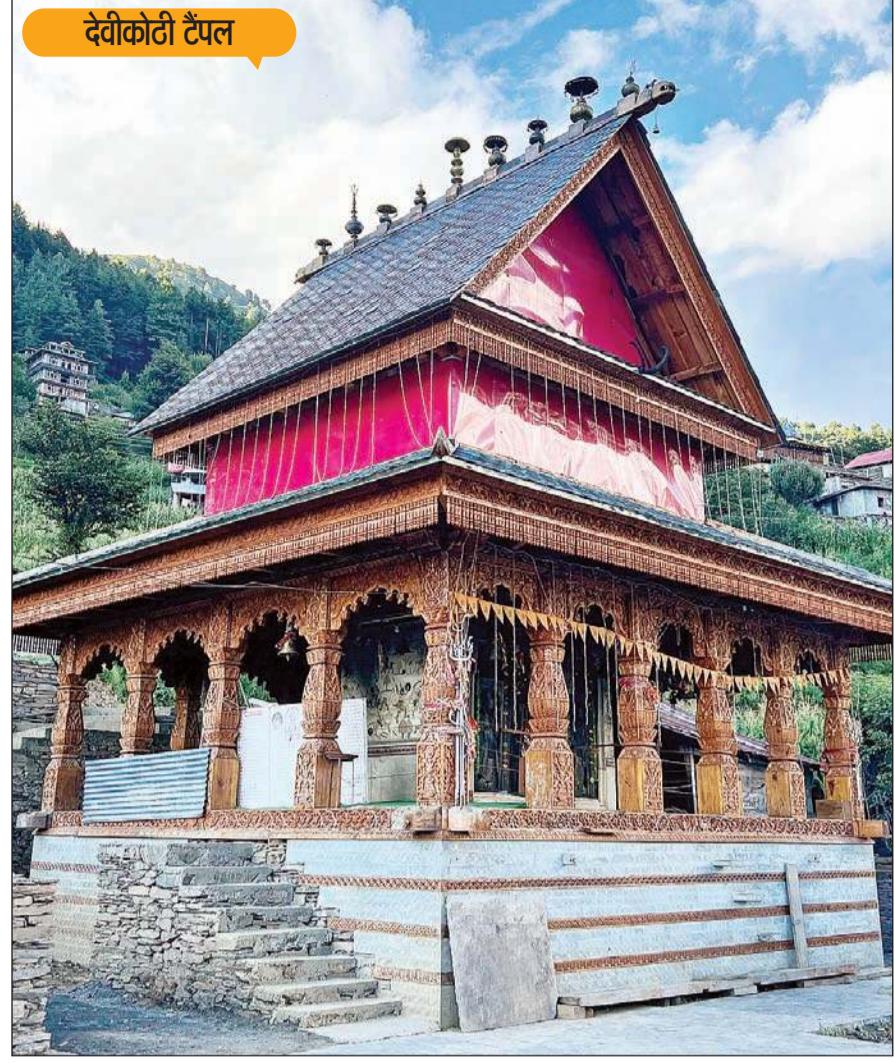


देवीकोठी टैपल

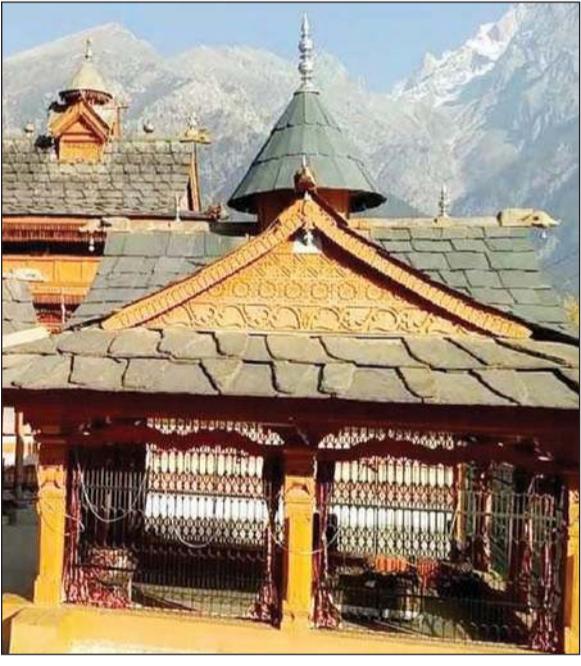
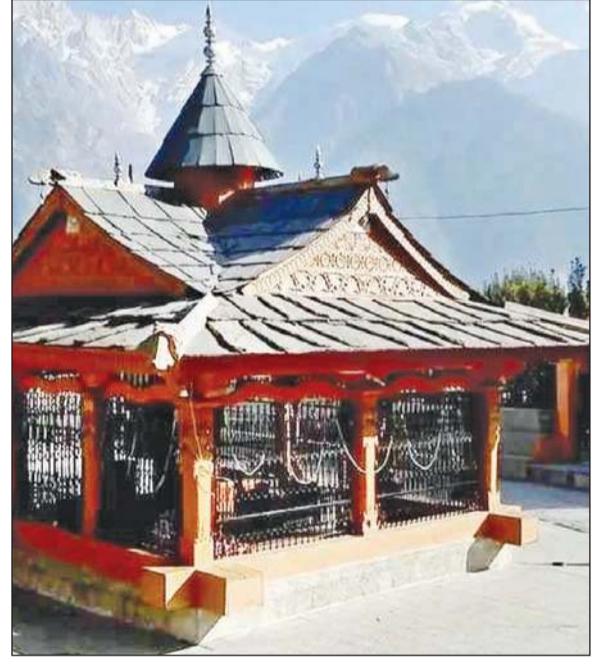


जिला कुल्लू के बंजार में गणेश चतुर्थी के अवसर पर उत्सुक भक्तों की टोली भजन कीर्तन में भाग लेती हुई।

खण्डर बुद्धि नृत्य

भरमोर। जिला स्तरीय चार दिवसीय माता शिव-शक्ति जातर मेला छतराड़ी के पहले दिन माता शिव-शक्ति की विधिवत् पूजा-अर्चना के बाद रथ यात्रा भी निकाली जाती है। इस मौके पर ऐतिहासिक खण्डर बुद्धि नृत्य को देखने के लिए देश-विदेश से लोग यहां पर आते हैं।

चंडिका किन्नौर की शक्तिशाली और धनी देवी



पारंपरिक पहनावे में युवतियां



किन्नौर। कोठी गांव रिकांगपिओं और कल्पा के मध्य बसा है। मंदिर का मुख्य आकर्षण केंद्र देवी का विशाल रथ है। यह रथ मंदिर के भीतर रखा रहता है। इस पर माता की सोने की प्रतिमाएं सुसज्जित रहती हैं। चंडिका देवी का दूसरा नाम शुभाग चंडिका भी है।

चंडिका किन्नौर की शक्तिशाली और धनी देवी है। धारणा है कि यह देवी बाणासुर के अद्वारह पुत्र-पुत्रियों में से एक है। बाणासुर ने हिमराक्षसी से विवाह किया था, जिससे ये पुत्र-पुत्रियों उत्पन्न हुए थे। बाद में इन पुत्र-पुत्रियों ने किन्नर प्रदेश को आपस में बांट दिया था। देवी चंडिका ने अपने पराक्रम से इस क्षेत्र

में अपना प्रभाव जमाया था। कोठी किन्नौर का सबसे प्राचीन गांव है। स्थानीय लोग इसे कोष्ठियों के नाम से ही जानते हैं। 2104 मीटर से 2,905 मीटर की ऊँचाई वाली छलानों के मध्य बसा यह रिकांगपिओ बाजार से लगभग ढेंड किलोमीटर ऊपर स्थित है।

चंडिका के मंदिर के दरवाजे के दोनों तरफ लघु कक्षों में प्रतिमाएं हैं। दाईं तरफ सूर्य की प्रतिमा है और किन्नर-कैलाश बिलोकुल सामने हैं। जब सूर्य उदय होता है तो पहली किरण इस प्रतिमा पर पड़ती है। मंदिर सतलज घाटीय शैली का मिश्रित रूप और कला का सजीव उदाहरण है। तल से शिखर तक लकड़ी पर सुंदर नक्काशी है।

की गई है जिसे रंगों से सजाया गया है। शिखर पर बड़ा गुम्बद है।

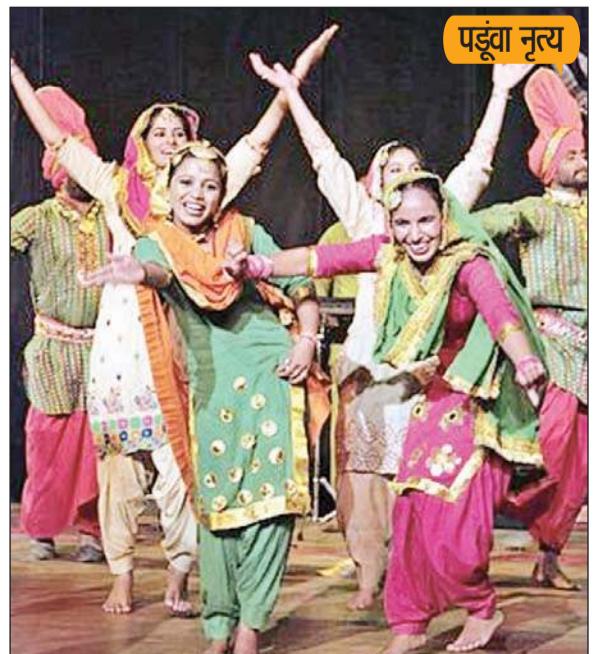
दो मंजिले इस मंदिर के गर्भभाग में देवी चंडिका का विशाल रथांग को सजाते समय उस पर लगाया जाता है। किन्नौर में इसे सर्वाधिक शक्तिशाली और सम्पन्न देवी माना जाता है। सालाना पूजा देवी का ग्रामख तरीहां है। इस पूजा का दिन देवी का ग्रामख देवी का विशाल रथांग को देखने वाले सभी तरफ से लगभग लगभग 12 जिलों के पारंपरिक पहनावे में युवतियां (ऊपर)। 'हिमाचल गौरव' पुरकार से सम्मानित बीरबल शर्मा द्वारा सचालित हिमाचल दर्शन फोटो गैलरी में प्रदेशभर से लगभग 12 जिलों के पारंपरिक पहनावे में युवतियां (ऊपर)।



देवता वीरनाथ का रथ



पहाड़ों पर मनाया ओणम



पहाड़ों नृत्य

कुल्लू जिले के कटराई क्षेत्र के आराध्य देवता वीरनाथ के नए बनाए गए थान की प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर देवता वीरनाथ का रथ।

धनशाला। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के धौलाधार परिसर-2 में विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले केरल के छात्रों की ओर से ओणम के अवसर पर सांस्कृतिक उत्सव आयोजित किया। इस कार्यक्रम के माध्यम से केरल के छात्रों ने दर्शकों को ओणम के इतिहास और महत्व से अवगत कराया।

सोलन का प्रसिद्ध पहाड़ा नृत्य। इसे तीज त्योहार पर प्रस्तुत किया जाता है।

